भीमकान्तैर्नृपगुणैः स बभूवोपजीविनाम् ।

अधृश्यश्चाभिगम्यश्च यादोरत्नैरिवार्णवः।।16।।

अन्वयः- भीमकान्तैः नृपगुणैः स उपजीविनां यादोरत्नैः अर्णव इव अधृश्यः च अभिगम्यः च बभूव।

अनुवादः- जिस प्रकार समुद्र मगरमच्छ आदि भयंकर जल जन्तुओं के कारण दूर ही रहने योग्य तथा रत्नों के कारण आश्रयणीय (समीप जाने योग्य) होता है उस प्रकार तेज प्रताप आदि भयंकर तथा दया दाक्षिण्यादि मनोहर राजकीय गुणों के कारण वे (राजा दिलीप) भी (लोगों के लिए) भयावह और आकर्षक दोनों थे।

टिप्पणियां:

विशेष राजा में ऐसी विशेषता होनी चाहिये कि लोग उसका भय भी मानें तथा उससे प्रेम भी करें। यदि राजा से भय न हो तो लोग राज्य की मर्यादाओं का पालन नहीं करेंगे और यदि राजा से प्रेम न तो तो लोग उदासीन रहेंगे और हृदय से उसे नहीं चाहेंगे। दिलीप में दोनों ही गुण थे। उसके शौर्य, पराक्रम आदि गुणों के कारण शत्रु उसके पास जाते डरते थे और उसके दया, दाक्षिण्य क्षमा आदि गुणों के कारण मित्र तथा याचक उसका आश्रय लेते थे और उससे अनुराग करते थे। राजा के लिए भीम एवं कान्त उभयगुणात्मक होना परमावश्यक है।

भीमकान्तैः भयानक भी आकर्षण भी। दिलीप में दोनों ही गुण थे। दोनों प्रकार के गुणों की विद्यमानता प्रजाजन के धर्मपालन में सन्तुलन लाती थी।

अधृष्यः न धृष्यः (धातु धृष्, यत्); वह जिसे तिरस्कृत न किया जा सके। दिलीप का भय माना जाता था।

अधिगम्य अभि उपसर्ग धातु गम्, यत्, जिसके पास पहुंचा जा सके, जो दूसरों को अपनी ओर आकृष्ट कर सके। प्रजाजन का वह प्रेम एवं समादार का पात्र भी था।

यादो यादांसि च रत्नानि च इति यादोरत्नानि (द्वन्द) तैः, भयानक जल-जन्तु मगरमच्छ (''यादांसि जलजन्तवः'' अमरकोश)। **रत्नैः** मणि-मौक्तिकादि। जिस तरह लोग भयंकर जल जीवों के कारण समुद्र से दूर रहते हैं और उसके पास जाने से डरते हैं परन्तु सुन्दर रत्नों के कारण उसके पास आते हैं और उसमें प्रवेश करते हैं, वैसे ही राजा दिलीप के शौर्य पराक्रम आदि गुणों से लोग उससे भयभीत रहते थे परन्तु उसके दया दाक्षिण्य आदि गुणों के कारण उसके समीप आते थे और उससे प्रेम करते थे।